

中華語海

中華語會編輯委員會

# 中华语海

——中华语言精粹宝典

(第一册)

盛晓光 赵宗乙 主 编  
李曙光 孟庆祥 副主编



黑龙江人民出版社

002·018-01660-705-14821

(精画全) 元 00.000

图书在版编目(CIP)数据

中华语海—中华语言精粹宝典/盛晓光、赵宗乙主编。  
哈尔滨：黑龙江人民出版社，1999.8

ISBN 7-207-03316-8

I. 中… II. ①盛… ②赵… III. 语言史 - 中国  
IV. 1208.7

中国版本图书馆 CIP 数据核字(1999)第 84352 号

责任编辑：吕观仁 任国绪  
封面设计：杨 群 李 栋

## 中 华 语 海

——中华语言精粹宝典

Zhonghua Yuhai

盛晓光 赵宗乙 主 编

李曙光 孟庆祥 副主编

出版发行：黑龙江人民出版社发行

(哈尔滨市南岗区宣庆小区一号楼)

印 刷：北京市兆成印刷厂

开 本：787×1092 毫米 1/16

印 张：228 6/8 · 插页 8

字 数：10 000 000

版 次：2000 年 07 月第 1 版第 2 次印刷

印 数：3 001 - 6 000

ISBN 7-207-03316-8/G · 590

定价：990.00 元（全四册）

# 中华语海

——中华语言精粹宝典

## 编委会名单

|     |     |     |
|-----|-----|-----|
| 主 编 | 盛晓光 | 赵宗乙 |
| 副主编 | 李曙光 | 孟庆祥 |
| 编 委 | 冯 月 | 冯尔刚 |
|     | 边向东 | 邢文学 |
|     | 朱晓明 | 华文逸 |
|     | 李春兰 | 王彦彬 |
|     | 邹远青 | 余清逸 |
|     | 凌梦然 | 王连弟 |
|     | 何 颖 | 张成林 |
|     | 刘秀晶 | 刘晓梅 |
|     | 付 辉 | 陈钦华 |
| 索 引 | 黄丽霞 | 何丽娟 |
|     |     | 钱 红 |
|     |     | 高景荣 |
|     |     | 朱 康 |
|     |     | 安春杰 |
|     |     | 杨铁彬 |
|     |     | 贾 晶 |
|     |     | 许海深 |
|     |     | 高丽芳 |
|     |     | 凌 丰 |
|     |     | 张 巍 |

# 中华语海

——中华语言精粹宝典分卷主编、副主编名单

|            |     |     |         |
|------------|-----|-----|---------|
| 成语典故卷(正编)  | 主 编 | 颜毓书 |         |
| 成语典故卷(副编)  | 主 编 | 余清逸 | 陈钦华 刘晓梅 |
| 掌故卷        | 主 编 | 韩式朋 | 吴国忠     |
| 寓言卷        | 主 编 | 孟庆祥 | 王彦彬     |
| 名言警句卷      | 主 编 | 浩 之 | 繁 红 繁 翠 |
| 楹联卷(名胜古迹编) | 主 编 | 李春兰 | 谢忠艳     |
| 诗词曲赋名句卷    | 主 编 | 赵宗乙 | 安春杰     |
|            | 副主编 | 靳继君 | 王连弟 高景轩 |
| 谜语卷        | 主 编 | 李春兰 | 赵晶莹     |
| 谚语卷        | 主 编 | 刘晓梅 | 刘秀晶 孔凤芝 |
| 歇后语卷       | 主 编 | 陈钦华 | 刘秀晶     |

中华语海 中  
——中华语言精粹宝典  
编纂者名单

(以姓氏笔画为序)

|     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| 丁一民 | 丁广玉 | 于 杰 | 于富堂 | 万 成 | 万 礼 | 万全友 | 万金来 |
| 马 方 | 马一德 | 马士文 | 马又宸 | 马玉笃 | 马国良 | 马新生 | 尤冬克 |
| 王 锋 | 王 静 | 王 中 | 王可文 | 王玉兰 | 王秀清 | 王玉华 | 王保国 |
| 王连弟 | 王东忠 | 王松盛 | 王柏林 | 王 鹤 | 王璋玉 | 王葆霖 | 王海文 |
| 王海君 | 王鑫野 | 韦 英 | 韦 严 | 韦 爽 | 韦荣瑞 | 尤 军 | 平 鹏 |
| 尤延之 | 毛 祥 | 毛一德 | 毛祖义 | 卞 玉 | 卞 霞 | 卞云程 | 俊英  |
| 方正己 | 孔凤芝 | 叶 红 | 田可久 | 田玉文 | 田环明 | 卞加致 | 鹏英  |
| 田 薇 | 田稼喜 | 田嘉英 | 卢翠莲 | 史更志 | 冯 月 | 冯尔刚 | 俊云  |
| 冯毓云 | 边向东 | 付 辉 | 邢文学 | 曲若蒙 | 任 庚 | 朱康亮 | 儒瑾  |
| 朱晓明 | 朱试元 | 朱明文 | 朱景轩 | 朱 倩 | 朱逸华 | 希连  | 锐标  |
| 朱 励 | 朱 煒 | 关晓娟 | 庆 凯 | 祁俊  | 朱庄  | 刘祖明 | 深宝  |
| 刘晓梅 | 刘吉祥 | 刘炳文 | 刘敏芝 | 刘胜  | 刘庆林 | 刘仕波 | 君智  |
| 刘秀晶 | 刘晋臣 | 刘淑勤 | 刘鸿达 | 刘自匪 | 军 相 | 孙国文 | 倩文  |
| 孙 宏 | 孙 荣 | 孙丽华 | 孙林生 | 孙林华 | 渔 渔 | 李乐萍 | 海璇  |
| 孙宗英 | 孙 静 | 杨铁林 | 策 华 | 杨金兰 | 秀 逸 | 杜桂果 | 禄斌  |
| 李红学 | 李玉芬 | 李恭仆 | 李月华 | 李先耕 | 葆 玉 | 辛 静 | 晔英  |
| 吴国忠 | 吴国仁 | 吴体信 | 吴林成 | 吴康泉 | 义 培 | 余沈  | 乙子  |
| 何 颖 | 何槐昌 | 何光秀 | 余洋  | 琳妹  | 连景  | 张陆  | 宝林  |
| 余璋力 | 余聆玲 | 余樊会 | 余晶晶 | 书 铭 | 应泽  | 武汉  | 静燕  |
| 张成林 | 张世梅 | 张林杰 | 张进平 | 张繁翠 | 旺 郑 | 范郑  | 子英  |
| 张玉俊 | 张 彪 | 张倩冰 | 福伟  | 孟繁华 | 郑 全 | 赵宗  | 金宝  |
| 陆长青 | 陈 宏 | 陈一飞 | 陈伟  | 陈庆化 | 云 云 | 俞小  | 俞茂  |
| 武隆祥 | 范 嘉 | 林百章 | 周厚  | 罗文化 | 海 岩 | 贾九  | 贾徐  |
| 周仁成 | 周金梅 | 周任文 | 周砥  | 周伍杰 | 斌 忠 | 徐晓  | 晓英  |
| 郑 杰 | 郑 彪 | 郑一兵 | 郑同文 | 郑用武 | 成 志 | 高 唐 | 俊始  |
| 赵定国 | 赵登云 | 赵晶莹 | 郑良华 | 绍华  | 胡 洪 | 曹东  | 忠来  |
| 俞琳琳 | 柴 华 | 施 华 | 费娜  | 鹏 徐 | 月 徐 | 彭大  | 林晓  |
| 夏复兴 | 钱正文 | 钱正敏 | 东章  | 胥 送 | 亢 高 | 程修  | 谢鲁  |
| 徐文礼 | 徐政刚 | 聂 鑫 | 秀 银 | 迎 高 | 凌 家 | 文钧  | 德仁  |
| 高景轩 | 郭之锐 | 郭如林 | 敬业  | 高 民 | 峰 梅 | 彭运  | 魏德  |
| 殷秋  | 黄师遵 | 黄美珍 | 瑛杰  | 凌 延 | 海 梅 | 修文  | 海   |
| 盛宏  | 盛光明 | 崔嘉凯 | 龚 正 | 峰 德 | 海 彭 | 庶 聚 | 腾   |
| 蒋春米 | 靳 欣 | 靳 佳 | 继君  | 式朋  | 海 彭 | 轼 潘 |     |
| 鲁 新 | 虞新民 | 詹维勒 | 蔺同翔 | 潘 玉 |     |     |     |

## 编纂说明

一、本书副题曰《中华语言精粹宝典》，其缘由有三：其一，“中华语言”是世界上最古老、最丰富、表现力最强的语言之一，它既包括汉民族语言，也包括中华大家庭中其他民族的语言，故以“中华语言”概括之。其二，“精粹”是指“中华语言”的精华。中华语言经几千年的发展演变和积淀，不乏精华，因而它是中华语言中最有代表性的部分，这种代表性有三层含义：一是选择之义，二是经典之义，三是实用之义（作为语言精华，或为固定词组，或为短语名句，皆可根据需要而自由运用，包括引用）。其三，“宝典”作为一个古汉语名词，有两个意思：一是指帝王用于上尊号或册立、册封的典册；二是指珍贵的典籍。显然这不是本书所取之义。因为“宝典”不是现代汉语词汇，因此本书是将“宝典”作为一个词组来使用的。宝，指宝贵之物的意思，因为是中华语言精粹，当然也就是最可宝贵的了；典，典范之义，即指本书所收之中华语言，不但是精华宝贵之部分，而且是可以作为语言之典范的部分。

二、语言是由语音、词汇和语法构成的一定的系统，这是广义的语言。本书所收之内容，以狭义的“语言”（指作为语言材料的基本以书面形式出现的固定词组、短语、短句、诗句、对偶句）为统贯，收成语、典故、掌故、寓言、名言警句、楹联、诗词曲赋名句、谚语、谜语、歇后语等十个方面的内容。由于每一类自身的情况不同，因而在收录的数量上也不相同。以古今而论，本书收录原则偏重于古，这主要考虑到语言的积淀性与稳定性；以雅俗而论，本书收录原则偏重于雅，这主要考虑到语言的传统性及书面交际性。故属于民间或口头创作方面内容相对收录要少一些，如谚语、谜语、歇后语等，这并非轻视这方面的语言精华，也不表明这方面的语言精华量少，而是由本书收录的侧重点所决定的；属于这方面的内容，适当的机会将另行选辑出版。

三、上述各类语言中有交叉的部分，绝对依类断之恐不可能，如成语与典故、典故与掌故、名言警句与诗词曲赋名句之间，对此，我们本着这样的原则：一是联系紧密的类别予以合并，如成语、典故，并为成语典故卷，因其量大，以正副编别之；二是尽量避免重复，确实难以避免的，如掌故与典故中有的立目同而内容不同，有的内容相关而立目不同，对此，除在释文上突出侧重面以避免重复外，我们还对辞目略作了调整。

四、“宝典”非辞典，因此本书根据所收内容的性质，除绝大部分以辞条形式表述外，对通俗易懂的对偶句、谚语、歇后语等只录不释，以免冗赘。

五、某些卷由于与原作者联系未果等原因，在编排体例上未能沟通，而某些内容又不能不收。比如楹联卷，《中国名胜对联大典》，在诸多同类书中堪称上乘，我们以该书为底本，并参照了该书及其他同类书的编排体例。对这些编者，我们表示真诚的谢意，感谢他们为收集编选中国古代语言精华所做的贡献，同时希望有关编者与我们取得联系。

六、为方便读者对有关条目进行查核，本书尽最大的可能提供了条目和引文的出处。

七、对文字数量较多的词目，为检索方便，只取最前面的一句作为索引词目。

八、本书设两套索引：笔画索引和汉语拼音索引；两套索引各依卷次编排，以便查找。

# 中华语海

## 中华语言精粹宝典正文各卷目录

|                  |        |
|------------------|--------|
| 成语典故卷(正编) .....  | (1)    |
| 成语典故卷(副编) .....  | (387)  |
| 掌故卷 .....        | (769)  |
| 寓言卷 .....        | (1111) |
| 名言警句卷 .....      | (1313) |
| 诗词曲赋名句卷 .....    | (1625) |
| 楹联卷(名胜古迹编) ..... | (2137) |
| 谜语卷 .....        | (2539) |
| 谚语卷 .....        | (2631) |
| 歇后语卷 .....       | (2689) |





## 成语典故卷(正编)·音序索引

## A

|      |       |      |       |      |       |      |       |       |       |
|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|-------|-------|
| 安危之机 | (156) | 八面威风 | (21)  | 白绢斜封 | (110) | 白玉微瑕 | (109) | 百里之才  | (127) |
| 安于泰山 | (155) | 八音五色 | (21)  | 白露为霜 | (111) | 白玉无瑕 | (109) | 百里之命  | (127) |
| 阿弥陀佛 | (196) | 鞍甲之劳 | (373) | 八战八克 | (21)  | 白马非马 | (109) | 百里之任  | (127) |
| 阿谀苟合 | (196) | 按部就班 | (248) | 八字打开 | (20)  | 白旄黄钺 | (110) | 百八烦恼  | (126) |
| 阿谀求容 | (196) | 按家伏业 | (248) | 拔刀相助 | (207) | 白眉赤眼 | (110) | 百八数珠  | (126) |
| 阿谀取从 | (196) | 按甲寝兵 | (248) | 拔丁抽楔 | (207) | 白面书郎 | (110) | 百杯百篇  | (127) |
| 阿谀顺旨 | (196) | 按图索骥 | (248) | 拔剑击柱 | (207) | 白面书生 | (110) | 百不失一  | (126) |
| 哀兵必胜 | (261) | 案萤千死 | (298) | 拔角脱距 | (207) | 白日见鬼 | (109) | 百乘之家  | (128) |
| 哀感顽艳 | (261) | 暗箭难防 | (355) | 拔来报往 | (207) | 白日升天 | (109) | 百尺杆头, |       |
| 哀矜惩创 | (261) | 暗香疏影 | (355) | 拔茅连茹 | (207) | 白日绣衣 | (109) | 更进一步  |       |
| 捶肩擦背 | (281) | 黯然销魂 | (386) | 拔山盖世 | (207) | 白山黑水 | (109) | 步     | (128) |
| 爱别离苦 | (289) | 昂昂千里 |       | 拔山之力 | (207) | 白商素节 | (110) | 百尺无枝  | (126) |
| 爱不释手 | (289) | 驹    | (215) | 拔舌地狱 | (207) | 白首空归 | (110) | 百尺之室  | (126) |
| 爱人以德 | (289) | 昂昂之鹤 | (215) | 拔十得五 | (207) | 白首穷经 | (110) | 百川灌河  | (126) |
| 碍手碍脚 | (354) | 敖不可长 | (276) | 拔十失五 | (207) | 白首同归 | (110) | 百川之主  | (126) |
| 安不忘危 | (155) | 傲不可长 | (343) | 拔树寻根 | (207) | 白首一节 | (110) | 百代过客  | (126) |
| 安车蒲轮 | (155) | 傲世妄荣 | (343) | 拔新领异 | (207) | 白首之心 | (110) | 百代文宗  | (126) |
| 安分守己 | (155) |      |       | 拔一毛而 |       | 白水素女 | (109) | 百般率舞  | (128) |
| 安富恤穷 | (156) |      |       | 利天下  |       | 白兔赤鸟 | (110) | 百沸滚汤  | (127) |
| 安家乐业 | (156) | 八百孤寒 | (20)  | 不为也  | (207) | 白往黑归 | (110) | 百福具臻  | (128) |
| 安乐窝  | (155) | 八百钱马 | (21)  | 跋涉山川 | (341) | 白屋之士 | (110) | 百花齐放  | (127) |
| 安如磐石 | (156) | 八百姻娇 | (20)  | 把臂入林 | (174) | 白苋紫茄 | (110) | 百卉含英  | (126) |
| 安如泰山 | (156) | 八拜之交 | (21)  | 白璧微瑕 | (111) | 白雪难和 | (110) | 百金之士  | (127) |
| 安身立命 | (156) | 八观六验 | (20)  | 白发青衫 | (109) | 白衣公卿 | (109) | 不拘一格  |       |
| 安身为乐 | (156) | 八花九裂 | (21)  | 白板青刍 | (110) | 白衣三公 | (109) | 月之光   | (128) |
| 安室利处 | (156) | 八荒之外 | (21)  | 白圭之玷 | (110) | 白衣秀士 | (109) | 百姓与能  | (127) |
| 安土乐业 | (155) | 八街九陌 | (21)  | 白黑分明 | (110) | 白衣宰相 | (109) | 百孔千疮  | (126) |
| 安危相易 | (156) | 八面玲珑 | (21)  | 白驹空谷 | (110) | 白鱼入舟 | (110) | 百里挑一  | (127) |
|      |       |      |       |      |       |      |       | 百样玲珑  | (128) |
|      |       |      |       |      |       |      |       | 百样依顺  | (128) |
|      |       |      |       |      |       |      |       | 百药之长  | (128) |

目 录 中

|       |       |       |       |      |       |       |       |       |       |       |      |
|-------|-------|-------|-------|------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|------|
| 百依百顺  | (127) | 豹鼠奇编  | (289) | 笔大如橼 | (285) | 宾至如归  | (298) | 并日而食  | (154) | 南走越   | (65) |
| 百宜枝杖  | (127) | 豹子心肝  | (289) | 笔刀砚城 | (285) | 冰壶秋月  | (151) | 并行不悖  | (154) | 不避刀锯  |      |
| 百丈竿头  | (126) | 鲍鱼之肆  | (360) | 笔力扛鼎 | (285) | 冰壶玉尺  | (151) | 病从口入, |       | 之诛    | (65) |
| 百折不挠  | (127) | 暴不肖人  | (374) | 笔妙舌妙 |       | 冰魂雪魄  | (152) | 祸从口   |       | 不卜可知  | (59) |
| 百纵千随  | (127) | 暴风骤雨  | (374) | 刀妙   | (285) | 冰肌雪肠  | (151) | 出     | (293) | 不测之渊  | (64) |
| 摆袖却金  | (355) | 暴戾恣睢  | (374) | 笔扫千军 | (285) | 冰肌玉骨  | (151) | 病人骨髓  | (293) | 不测之罪  | (64) |
| 败军之将, |       | 暴内陵外  | (374) | 笔走龙蛇 | (285) | 冰解冻释  | (152) | 病万变药  |       | 不差累黍  |      |
| 不可言   |       | 暴殄天物  | (374) | 必传之作 | (116) | 冰瓯雪碗  | (151) | 亦万变   | (293) | 不成人之  |      |
| 勇     | (215) | 卑礼厚币  | (219) | 闭门酣歌 | (154) | 冰清玉粹  | (152) | 拔草寻蛇  | (208) | 恶     | (65) |
| 败柳残花  | (215) | 杯盘狼藉  | (202) | 闭门造车 | (154) | 冰清玉洁  | (152) | 拨火又长, |       | 不成三瓦  | (61) |
| 败鳞残甲  | (215) | 悲愁垂涕  | (339) | 闭明塞聪 | (154) | 冰清玉润  | (152) | 挂门又   |       | 不成体统  | (61) |
| 棋有胜   |       | 悲歌慷慨  | (339) | 闭月羞花 | (154) | 冰散瓦解  | (152) | 短     | (208) | 不痴不聋  | (65) |
| 着     | (215) | 悲欢离合  | (339) | 敝鼓丧豚 | (321) | 冰释理顺  | (152) | 拨乱反正  | (208) | 不存不济  | (61) |
| 班特处士  | (276) | 悲染丝   | (338) | 敝裘羸马 | (321) | 冰水为之, |       | 拨云见日  | (208) | 不存之地  | (61) |
| 班香宋艳  | (276) | 悲伤憔悴  | (339) | 敝帷不弃 | (321) | 而寒于   |       | 拨嘴擦牙  | (208) | 不打不成  |      |
| 般若之水  | (289) | 悲天悯人  | (339) | 敝帚千金 | (367) | 水     | (152) | 波澜老成  | (232) | 相识    | (65) |
| 搬斗是非  | (354) | 悲喜交集  | (339) | 筚门圭窦 | (342) | 冰炭不同  |       | 波澜壮阔  | (232) | 不得人心  | (64) |
| 搬唇递舌  | (354) | 北道主人  | (103) | 筚门闺窦 | (342) | 器     | (152) | 波罗蜜多  | (232) | 得意人   | (64) |
| 搬弄是非  | (354) | 北叟失马  | (103) | 辟公之相 | (364) | 冰炭不相  |       | 波属云委  | (232) | 不动声色  | (62) |
| 阪上走丸  | (160) | 备失匕箸  | (224) | 弊车羸马 | (367) | 井     | (152) | 播棲睸目  | (373) | 不二法门  | (59) |
| 半壁江山  | (114) | 背本趋末  | (250) | 壁垒森严 | (380) | 冰炭不言, |       | 播之声诗  | (373) | 不费吹灰  |      |
| 半筹不纳  | (115) | 背城而战  | (250) | 壁垒千仞 | (380) | 冷热自   |       | 伯歌秀舞  | (181) | 之力    | (65) |
| 半间不界  | (114) | 背道而驰  | (250) | 避仇隐屠 | (380) | 知     | (152) | 伯乐一顾  | (180) | 不分好歹  | (60) |
| 半斤八两  | (114) | 背恩忘义  | (250) | 避井入坑 | (380) | 冰炭相爱  | (151) | 伯牛之疾  | (180) | 不分轩轾  | (60) |
| 半路出家  | (115) | 背井离乡  | (250) | 避坑落井 | (380) | 冰弦玉柱  | (151) | 伯氏吹埙, |       | 不分皂白  | (60) |
| 半梦半醒  | (114) | 背山起楼  | (250) | 避世离俗 | (380) | 冰消瓦解  | (151) | 仲氏吹   |       | 不分畛域  | (60) |
| 半面之识  | (114) | 背水而战  | (250) | 避重就轻 | (380) | 冰雪聪明  | (152) | 箒     | (181) | 不丰不杀  | (60) |
| 半青半黄  | (114) | 背水之阵  | (250) | 璧联珠灿 | (385) | 冰柱雪车  | (151) | 伯牙绝弦  | (180) | 不伏烧埋  | (62) |
| 半死半生  | (114) | 倍日并行  | (287) | 鞭辟近里 | (383) | 冰姿玉骨  | (151) | 伯仲叔季  | (181) | 不尴不尬  | (65) |
| 半推半就  | (114) | 恃入恃出  | (299) | 便辟佞慧 | (257) | 兵不逼好  | (182) | 伯仲之间  | (181) | 不攻自破  | (62) |
| 半伪半真  | (114) | 被宠若惊  | (303) | 便宜施行 | (257) | 兵不如者, |       | 博大精深  | (331) | 不苟言笑  | (63) |
| 半信半疑  | (114) | 奔走相告  | (206) | 变化无常 | (228) | 勿与挑   |       | 博而不精  | (332) | 不瞽不聋  | (65) |
| 半夜敲门  |       | 奔走之友  | (206) | 变化无穷 | (227) | 战     | (182) | 博而寡要  | (332) | 不关痛痒  | (62) |
| 不吃惊   | (115) | 奔逸绝尘  | (206) | 变化无穷 | (227) | 兵车蹂躏  | (182) | 博关经典  | (332) | 不过尔尔  | (61) |
| 邦虎吃食  | (239) | 贲育弗夺  | (245) | 变色之言 | (228) | 兵多者败  | (182) | 博士买驴  | (331) | 不毁之制  | (65) |
| 帮畿千里  | (119) | 本来面目  | (98)  | 变生不测 | (228) | 兵分势弱  | (182) | 博通经籍  | (332) | 不羁之才  | (65) |
| 帮闲钻懒  | (239) | 本性难移  | (98)  | 变态百出 | (228) | 兵戈抢攘  | (182) | 博物君子  | (332) | 不即不离  | (62) |
| 傍观冷眼  | (342) | 绷琶拶压  | (329) | 变徵之声 | (228) | 兵革互兴  | (182) | 博学笃志  | (332) | 不急之务  | (63) |
| 傍人篱壁  | (342) | 驷中毙外  | (318) | 辩才无碍 | (380) | 兵慌马乱  | (182) | 博学审问  | (332) | 不计其数  | (60) |
| 傍若无人  | (342) | 鼻头出火  | (368) | 辩说属辞 | (380) | 兵来将敌, |       | 薄唇轻言  | (378) | 不假思索  | (64) |
| 包罗万象  | (113) | 鼻息如雷  | (368) | 标同伐异 | (242) | 水来土   |       | 薄暮冥冥  | (378) | 不稼不穑  | (65) |
| 褒采一介  | (375) | 比比皆是  | (67)  | 表里精粗 | (199) | 堰     | (182) | 薄物细故  | (378) | 不闻不闻  | (62) |
| 褒善贬恶  | (375) | 比肩并起  | (67)  | 表里如一 | (199) | 兵连祸结  | (182) | 薄祚寒门  | (378) | 不见经传  | (60) |
| 褒衣博带  | (375) | 比土不足, |       | 表里山河 | (199) | 兵强马壮  | (182) | 跛立箕坐  | (341) | 不今不古  | (60) |
| 宝钗分股  | (229) | 比下有   |       | 表里相依 | (199) | 兵刃交于  |       | 跛驴之伍  | (341) | 不近人情  | (62) |
| 宝货难售  | (229) | 余     | (67)  | 表里相应 | (199) | 前     | (182) | 跛足从事  | (341) | 不经一事, |      |
| 宝山空回  | (229) | 比屋可封  | (67)  | 表里一致 | (199) | 兵无常势  | (182) | 擘肌分理  | (382) | 不长一   |      |
| 宝珠市饼  | (230) | 比物此志  | (67)  | 表著之位 | (199) | 兵有所不  |       | 补苴罅漏  | (194) | 智     | (65) |
| 饱经霜雪  | (226) | 比物连类  | (67)  | 别出机杼 | (176) | 击     | (182) | 补天柱地  | (194) | 不经之谈  | (63) |
| 饱腾之乐  | (226) | 比翼齐飞  | (67)  | 别出心裁 | (176) | 兵在其颈  | (182) | 捕风捉影  | (281) | 不绝若线  | (64) |
| 饱闻厌道  | (226) | 彼人也,  |       | 别风淮雨 | (176) | 秉要执本  | (210) | 捕影系风  | (281) | 不刊之法  | (61) |
| 报本反始  | (175) | 予人也   | (220) | 别鹤孤鸾 | (176) | 秉烛夜游  | (210) | 不拔之策  | (63)  | 不刊之论  | (61) |
| 报仇雪恨  | (175) | 彼一时,  |       | 别具肺肠 | (176) | 炳炳烺烺  | (265) | 不拔之志  | (63)  | 不刊之书  | (61) |
| 抱冰公事  | (206) | 此一时   | (220) | 别具只眼 | (176) | 炳炳麟麟  | (266) | 不白之冤  | (61)  | 不堪设想  | (64) |
| 抱关之怨  | (206) | 彼哉彼哉  | (220) | 别有用心 | (176) | 炳烛夜游  | (266) | 不败之地  | (63)  | 不可理喻  | (61) |
| 抱蔓摘瓜  | (206) | 笔参造化  | (285) | 宾朋成市 | (298) | 并驾齐驱  | (154) | 不北走胡  |       | 不可名状  | (60) |

## 中华语海

|      |      |      |       |          |       |           |       |      |       |      |       |
|------|------|------|-------|----------|-------|-----------|-------|------|-------|------|-------|
| 不可磨灭 | (61) | 不惜身命 | (64)  | 布袜青鞋     | (100) | 操之过急      | (354) | 倡而不和 | (288) | 车稀马烦 | (68)  |
| 不可偏废 | (61) | 不系之舟 | (62)  | 布衣蔬食     | (99)  | 草长莺飞      | (244) | 倡条冶叶 | (288) | 车攻马同 | (68)  |
| 不可企及 | (60) | 不相上下 | (63)  | 步步莲花     | (176) | 草创未就      | (244) | 唱筹量沙 | (312) | 车马辐辏 | (68)  |
| 不可穷之 |      | 不肖子孙 | (62)  | 步履安祥     | (176) | 草满围圈      | (244) | 唱叫扬疾 | (312) | 车前八骏 | (68)  |
| 辩    | (65) | 不信人直 | (63)  | 步履维艰     | (176) | 草茅之臣      | (244) | 超凡入圣 | (337) | 车同轨  |       |
| 不可胜道 | (60) | 不朽之芳 | (61)  | 步人后尘     | (176) | 草茅危言      | (244) | 超群绝伦 | (337) | 书同文  | (68)  |
| 不可胜数 | (61) | 不朽之勋 | (61)  | 步线行针     | (176) | 草木黄落      | (244) | 超世之才 | (337) | 车辖铁尽 | (68)  |
| 不可胜用 | (60) | 不言之化 | (62)  |          |       | 草木怒生      | (244) | 超以象外 | (337) | 车胤盛萤 | (68)  |
| 不可收拾 | (60) | 不言之听 | (62)  |          |       | 草木知威      | (244) | 超轶绝尘 | (337) | 车在马前 | (68)  |
| 不可思议 | (60) | 不言之言 | (62)  | C        |       | 草薤禽狝      | (244) | 朝不及夕 | (333) | 车辙马迹 | (68)  |
| 不可言宣 | (60) | 不一而足 | (59)  | 才高八斗     | (35)  | 草头木脚      | (244) | 朝朝寒食 |       | 彻底澄清 | (183) |
| 不可言状 | (60) | 不夷不惠 | (61)  | 才兼文武     | (35)  | 草头天子      | (244) | 夜    |       | 彻上彻下 | (183) |
| 不可一世 | (60) | 不以人废 |       | 才如史迁     | (35)  | 草藤木条      | (244) | 夜元宵  | (335) | 彻头彻尾 | (183) |
| 不可逾越 | (61) | 盲    | (65)  | 才疏意广     | (36)  | 插科打诨      | (338) | 朝朝暮暮 | (334) | 瞋目张胆 | (374) |
| 不可终日 | (60) | 不以为然 | (60)  | 才望高雅     | (35)  | 茶饭无心      | (244) | 朝朝暮夕 | (334) | 尘饭涂羹 | (130) |
| 不愧不作 | (64) | 不义富贵 | (60)  | 才艺卓绝     | (35)  | 茶坊酒店      | (244) | 朝成暮递 | (333) | 尘外孤标 | (130) |
| 不愧屋漏 | (64) | 不义之财 | (60)  | 才藻富赡     | (36)  | 茶烟舞丝      | (244) | 朝成暮毁 | (333) | 臣门如市 | (129) |
| 不劳而得 | (62) | 不易一字 | (63)  | 材大难用     | (168) | 茶余酒后      | (244) | 朝穿暮塞 | (334) | 臣心如水 | (130) |
| 不量力而 |      | 不易之典 | (63)  | 村疏志大     | (168) | 察察为明      | (371) | 朝歌夜弦 | (334) | 臣哉等哉 | (130) |
| 轻敌   | (65) | 不易之论 | (63)  | 财成辅相     | (179) | 察见渊鱼      | (371) | 朝过夕改 | (333) | 沉博绝丽 | (193) |
| 不了了之 | (59) | 不因人热 | (61)  | 财命殆殆     | (179) | 差强人意      | (284) | 朝晖夕阴 | (334) | 沉李浮瓜 | (193) |
| 不吝金玉 | (63) | 不由自主 | (61)  | 财穷于内     | (179) | 差之毫厘，谬以千里 |       | 朝齑暮盐 | (335) | 沉默寡言 | (193) |
| 不露圭角 | (65) | 不虞之变 | (65)  | 彩凤随鸦     | (317) |           |       | 朝开暮落 | (333) | 沉潜刚克 | (193) |
| 不毛之地 | (60) | 不虞之誉 | (65)  | 餐风宿露     | (378) |           |       | 朝聚暮陈 | (334) | 沉郁顿挫 | (193) |
| 不明不白 | (63) | 不约而同 | (62)  | 餐松饮涧     | (378) | 豺狼成性      | (290) | 朝令夜遁 | (333) | 沉冤莫白 | (193) |
| 不谋而合 | (64) | 不在话下 | (62)  | 残编断简     | (246) | 豺狼横道      | (290) | 朝名市利 | (333) | 沉灶产蛙 | (193) |
| 不能赞一 |      | 不知大体 | (63)  | 残荼剩饭     | (246) | 豺狼之声      | (289) | 朝耕暮耘 | (334) | 沉著痛快 | (193) |
| 辞    | (65) | 不知丁董 | (63)  | 残花败柳     | (245) | 豺狼之吻      | (289) | 朝培夕沤 | (334) | 陈蔡之厄 | (196) |
| 不念旧恶 | (63) | 不知甘苦 | (63)  | 残芳暮节     | (246) | 蝉不知雪      | (367) | 朝秦暮楚 | (334) | 陈力就列 | (196) |
| 不偏不党 | (64) | 不知好歹 | (63)  | 残年余力     | (245) | 蝉腹龟肠      | (367) | 朝荣夕灭 | (334) | 陈善闭邪 | (196) |
| 不偏不倚 | (64) | 不知进退 | (63)  | 嘶鬼企鹤     | (324) | 蝉衫麟带      | (367) | 朝荣夕死 | (334) | 陈言务去 | (196) |
| 不期而遇 | (64) | 不知其子 |       | 惨敲少恩     | (324) | 猖狂于时      | (318) | 朝升暮合 | (333) | 晨去暮来 | (313) |
| 不欺暗室 | (64) | 视其父  | (63)  | 惨怆怛悼     | (323) | 曾几何时      | (346) | 朝生暮死 | (333) | 晨钟暮鼓 | (313) |
| 不倾之地 | (64) | 不知其子 |       | 惨怛之疾     | (323) | 长风破浪      | (74)  | 朝生夕死 | (333) | 称不容口 | (285) |
| 不日不月 | (60) | 视其母  | (65)  | 惨雨愁云     | (323) | 长歌入阵      | (175) | 朝施暮戮 | (334) | 称孤道寡 | (285) |
| 不如归去 | (61) | 不知其子 |       | 灿烂炳煥     | (189) | 长计远虑      | (74)  | 朝思暮想 | (334) | 称家有无 | (285) |
| 不衫不履 | (63) | 视其友  | (65)  | 沧沧凉凉     | (193) | 长姣美人      | (75)  | 朝思夕计 | (333) | 称体裁衣 | (285) |
| 不上不下 | (60) | 不知寝食 | (63)  | 沧海遗珠     | (193) | 长虑顾后      | (75)  | 朝肆暮家 | (334) | 称意之才 | (285) |
| 不胜其烦 | (63) | 不值一钱 | (63)  | 苍蝇附骥     |       | 长鸣都尉      | (75)  | 朝闻夕改 | (334) | 撑肠拄肚 | (374) |
| 不胜之任 | (63) | 不忮不求 | (62)  | 尾，而      |       | 长命百岁      | (75)  | 朝夕不倦 | (333) | 成佛在后 | (125) |
| 不时之需 | (62) | 不治之症 | (63)  | 致千里      | (170) | 长命富贵      | (75)  | 朝夕之策 | (333) | 成立家业 | (125) |
| 不识抬举 | (62) | 不栉进士 | (64)  | 藏垢怀耻     | (381) | 长目飞耳      | (74)  | 朝夕之池 | (333) | 成人不自 |       |
| 不食之地 | (64) | 不主故常 | (61)  | 藏龙卧虎     | (381) | 长年三老      | (74)  | 朝新幕敝 | (334) | 在，自  |       |
| 不世之材 | (61) | 不着边际 | (64)  | 藏怒宿怨     | (381) | 长篇大论      | (75)  | 朝阳凤鸣 | (333) | 在不成  |       |
| 不世之功 | (61) | 不訾之禄 | (65)  | 藏器待时     | (381) | 长髯主簿      | (75)  | 朝衣朝冠 | (333) | 人    | (125) |
| 不死不生 | (61) | 不訾之损 | (65)  | 藏巧于拙     | (381) | 长身瘦面      | (74)  | 朝衣东市 | (333) | 成竹在胸 | (125) |
| 不速之客 | (64) | 不足齿数 | (62)  | 藏头护尾     | (381) | 长生不老      | (74)  | 朝益暮习 | (334) | 承上起下 | (236) |
| 不笋久竹 | (64) | 不足挂齿 | (62)  | 藏头露尾     | (381) | 长绳系日      | (75)  | 朝蠅暮蚊 | (334) | 诚欢诚喜 | (234) |
| 不桃之庙 | (64) | 不足轻重 | (62)  | 藏修游息     | (381) | 长亭短亭      | (75)  | 朝盈夕虚 | (334) | 诚哉是言 | (234) |
| 不通水火 | (64) | 不足为奇 | (62)  | 藏之名山，传之其 |       | 长袖善舞      | (75)  | 朝靄夕飧 | (335) | 乘车戴笠 | (283) |
| 不同戴天 | (62) | 不足为训 | (62)  | 人        | (381) | 长夜之饮      | (75)  | 朝云暮雨 | (333) | 乘车之会 | (283) |
| 不痛不痒 | (64) | 布被瓦器 | (100) | 操刀必割     | (354) | 长吁短叹      | (74)  | 朝真暮伪 | (334) | 乘刚多阻 | (283) |
| 不文不武 | (60) | 布帛菽粟 | (100) | 操刀伤锦     | (354) | 长斋绣佛      | (75)  | 朝种暮获 | (334) | 乘人之车 |       |
| 不闻不问 | (64) | 布帆无恙 | (99)  | 操履无玷     | (355) | 长治久安      | (74)  | 朝奏暮召 | (334) | 者载人  |       |
| 不闻其香 | (64) | 布鼓毋过 |       | 操奇计羸     | (354) | 长袖善舞      | (75)  | 嘲风咏月 | (374) | 之患   | (283) |
| 不务正业 | (61) | 雷门   | (100) |          |       | 尝试之说      | (251) | 车怠马烦 | (68)  | 乘伪行诈 | (283) |



# 中华语海

|         |       |      |       |      |       |      |       |       |       |      |       |
|---------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|-------|-------|------|-------|
| 单车之使    | (229) | 刀痕箭瘢 | (25)  | 登高而招 | (350) | 狗尾续  | (343) | 动不失时  | (119) | 肚生荆棘 | (185) |
| 单刀直入    | (229) | 刀山剑树 | (25)  | 登高能赋 | (350) | 貂裘换酒 | (343) | 动如参商  | (119) | 度日如年 | (261) |
| 单夫只妇    | (229) | 刀头燕尾 | (25)  | 登高自卑 | (350) | 雕文刻镂 | (379) | 动如雷震  | (119) | 度外之人 | (261) |
| 单复之术    | (229) | 刀折矢尽 | (25)  | 登太山而 |       | 雕章篆句 | (379) | 动心忍性  | (119) | 蠹国害民 | (386) |
| 单鹄寡兔    | (229) | 叨叨絮絮 | (104) | 小天下  | (350) | 吊死问疾 | (132) | 冻解冰释  | (187) | 蠹居棋处 | (386) |
| 单枪匹马    | (229) | 倒戈卸甲 | (287) | 登坛拜将 | (350) | 吊死问生 | (132) | 冻者假衣  |       | 蠹众而木 |       |
| 单文孤证    | (229) | 倒冠落佩 | (287) | 等闲视之 | (342) | 钓游之地 | (218) | 于春    | (187) | 折，隙  |       |
| 单则易折，   |       | 倒海翻江 | (288) | 低三下四 | (181) | 调兵遣将 | (303) | 惆疑虚喝  | (267) | 大而墙  |       |
| 众则难     |       | 倒廪倾囷 | (288) | 低声下气 | (181) | 掉三寸舌 | (310) | 栋梁之器  | (242) | 坏    | (386) |
| 摧       | (229) | 倒裳索领 | (288) | 低头倾首 | (181) | 掉以轻心 | (310) | 栋梁之用  | (242) | 短兵接战 | (341) |
| 担隔夜忧    | (208) | 倒载干戈 | (287) | 羝乳得归 | (322) | 叠床架屋 | (365) | 栋折榱崩  | (242) | 短绠不可 |       |
| 担惊受怕    | (208) | 倒置干戈 | (288) | 羝羊触藩 | (322) | 蝶使蜂媒 | (374) | 洞房花烛  | (269) | 汲深井  | (342) |
| 担雪塞井    | (208) | 蹈常袭故 | (382) | 堤溃蚁孔 | (332) | 丁公凿井 | (20)  | 洞若观火  | (269) | 短褐不完 | (341) |
| 担雪填井    | (208) | 悼心失图 | (323) | 滴粉挂酥 | (371) | 丁是丁， |       | 洞天福地  | (269) | 短垣自逾 | (341) |
| 婢见洽闻    | (337) | 盗不过五 |       | 敌不可假 | (283) | 卯是卯  | (20)  | 都鄙有章  | (279) | 短章醉墨 | (341) |
| 策食豆羹    | (368) | 女之门  | (320) | 敌国灭， |       | 丁一卯二 | (20)  | 都俞吁咷  | (279) | 断脣决腹 | (321) |
| 策食与饿    | (368) | 盗亦有道 | (319) | 谋臣亡  | (283) | 丁一确二 | (20)  | 斗斛之禄  | (86)  | 断残毁简 | (321) |
| 胆大心小    | (260) | 盗憎主人 | (320) | 敌国外患 | (283) | 丁子有尾 | (20)  | 斗酒双柑  | (86)  | 断长补短 | (320) |
| 胆大于身    | (260) | 盗钟掩耳 | (320) | 涤荡邪秽 | (299) | 顶天立地 | (210) | 斗筲之材  | (86)  | 断长续短 | (320) |
| 胆小如鼠    | (261) | 道边苦李 | (346) | 涤荡燕瑕 | (299) | 鼎新革故 | (341) | 半筲之徒  | (86)  | 断恶修善 | (321) |
| 胆战心惊    | (260) | 道不同， |       | 涤瑕蕪垢 | (299) | 鼎玉幕燕 | (341) | 斗筲之役  | (86)  | 断而敢行 | (321) |
| 旦暮之业    | (105) | 不相为  |       | 涤瑕蕪秽 | (299) | 鼎玉龟符 | (341) | 半筲之子  | (86)  | 断发文身 | (321) |
| 旦日夕     | (105) | 谋    | (346) | 荻塘女子 | (279) | 丢三落四 | (139) | 斗升之禄  | (86)  | 断梗飞蓬 | (321) |
| 旦夕之费    | (105) | 道大莫容 | (346) | 砥节砺行 | (280) | 东井西凌 | (104) | 斗粟尺布  | (86)  | 断梗流萍 | (321) |
| 旦夕之危    | (105) | 道德名望 | (346) | 砥厉名号 | (280) | 东床坦腹 | (102) | 斗转参横  | (86)  | 断鹤续凫 | (321) |
| 旦种暮成    | (105) | 道合志同 | (346) | 砥行立名 | (280) | 东倒酉歪 | (102) | 豆蔻年华  | (170) | 斯庵画粥 | (321) |
| 弹丸黑痣    | (328) | 道键禅关 | (346) | 地坼天崩 | (120) | 东风吹马 |       | 豆棚瓜架  | (170) |      |       |
| 弹丸黑子    | (328) | 道殣相望 | (346) | 地丑德齐 | (120) | 耳    | (103) | 豆剖瓜分  | (170) | 断简残编 | (321) |
| 弹压山川    | (328) | 道貌岸然 | (346) | 地大物博 | (120) | 东扶西倒 | (102) | 豆重榆瞑  | (170) | 断井颓垣 | (320) |
| 淡泊明志    | (325) | 道远日暮 | (346) | 地负海涵 | (120) | 东渐西被 | (102) | 毒手尊拳  | (239) | 断墨残楮 | (321) |
| 淡扫蛾眉    | (325) | 道远知骥 | (346) | 地覆天翻 | (120) | 东箭南金 | (102) | 毒药苦口  |       | 断头将军 | (321) |
| 当今无辈    | (131) | 得不补失 | (316) | 地广人稀 | (119) | 东拉西扯 | (102) | 利于病   | (240) | 断雨残云 | (321) |
| 当局苦迷    | (131) | 得不偿失 | (316) | 地角天涯 | (120) | 东劳西燕 | (102) | 读书百遍， |       | 断章截句 | (321) |
| 当局者迷，   |       | 得不酬失 | (316) | 地久天长 | (119) | 东篱君子 | (103) | 其义自   |       | 断章取义 | (321) |
| 旁观者     |       | 得不亡失 | (316) | 地利不如 |       | 东流西上 | (102) | 见     | (304) | 堆塚死尸 | (321) |
| 清       | (131) | 得寸得尺 | (316) | 人和   | (120) | 东门黄犬 | (102) | 读书三到  | (304) | 堆金叠玉 | (306) |
| 当前决意    | (131) | 得隽之句 | (317) | 地平天成 | (120) | 东眺西迁 | (102) | 独步当时  | (259) | 堆金积玉 | (306) |
| 当世才度    | (131) | 得饶人处 |       | 地上天宫 | (119) | 东西南北 |       | 独夫民贼  | (259) | 对答如流 | (118) |
| 当世才具    | (131) | 且饶人  | (317) | 地头蛇  | (119) | 人    | (103) | 独具只眼  | (260) | 对景伤怀 | (118) |
| 当世得失    | (131) | 得人为祟 | (316) | 地嫌势逼 | (120) | 东徙西迁 | (102) | 独木不成  |       | 对景伤情 | (118) |
| 当世儒宗    | (131) | 得手应心 | (316) | 掂斤估两 | (310) | 东行西走 | (102) | 林     | (260) | 对症用药 | (118) |
| 当一天和尚撞一 |       | 得天独厚 | (316) | 搬唇齦嘴 | (384) | 东野巴人 | (102) | 独木难支  | (259) | 对症之药 | (118) |
| 天钟      | (131) | 得免忘蹄 | (317) | 搬扑不破 | (384) | 东怨西怒 | (102) | 独拍无声  | (259) | 钝学累功 | (256) |
| 当轴处中    | (131) | 得匣还珠 | (317) | 颠倒是非 | (378) | 东瞻西望 | (103) | 独清独醒  | (260) | 多藏厚亡 | (149) |
| 当轴之士    | (131) | 得婿如龙 | (317) | 颠来倒去 | (378) | 东征西讨 | (102) | 独树一帜  | (260) | 多愁多病 | (149) |
| 荡荡默默    | (245) | 得鱼忘荃 | (317) | 颠乾倒坤 | (378) | 冬爨鼎， |       | 独往独来  | (260) | 多多益办 | (149) |
| 荡荡悠悠    | (245) | 德薄能鲜 | (375) | 颠越不恭 | (378) | 夏造冰  | (112) | 独弦哀歌  | (260) | 多怀顾望 | (149) |
| 荡荡之勋    | (245) | 德厚流光 | (375) | 点金成铁 | (250) | 火    | (112) | 独行君子  | (259) | 多贱寡贵 | (149) |
| 荡气回肠    | (245) | 德隆望重 | (375) | 点石化金 | (250) | 冬暖夏清 | (112) | 独学孤陋  | (260) | 多口阿师 | (149) |
| 荡然肆志    | (245) | 德洋恩普 | (375) | 电光朝露 | (105) | 冬日黑裘 | (111) | 独自乐乐  | (259) | 多历年所 | (149) |
| 荡为寒烟    | (245) | 的溜朴碌 | (219) | 电光石火 | (105) | 冬日夏云 | (111) | 杜口结舌  | (168) | 多慢则生 |       |
| 荡析离居    | (245) | 的一确二 | (219) | 刁天决地 | (25)  | 冬扇夏炉 | (112) | 杜口吞声  | (168) | 乱    | (150) |
| 荡倚冲冒    | (245) | 灯红酒绿 | (155) | 刁钻古怪 | (25)  | 冬温夏清 | (112) | 杜门谢客  | (168) | 多钱善贾 | (149) |
| 刀耕火种    | (25)  | 灯火辉煌 | (155) | 貂不足， |       | 冬夏青青 | (112) | 杜诗韩文  | (168) | 多情多感 | (149) |
| 刀耕火耨    | (25)  | 灯火辉煌 | (155) |      |       |      |       | 肚里泪下  | (185) | 多识君子 | (149) |
|         |       |      |       |      |       |      |       | 肚里屏风  | (185) | 多事多患 | (149) |







|             |            |            |            |            |            |
|-------------|------------|------------|------------|------------|------------|
| 虎入羊群 (210)  | 神奇 (75)    | 荒淫无度 (243) | 浑俗和尚 (269) | 饥来吃饭 (113) | 箕踞而遨 (368) |
| 虎生文炳 (211)  | 化为乌有 (75)  | 皇亲国戚 (257) | 魂不附体 (351) | 饥者易食 (113) | 箕裘之业 (368) |
| 虎视眈眈 (211)  | 画地成图 (203) | 皇天后土 (257) | 魂飞魄散 (351) | 机变如神 (120) | 箕山之节 (368) |
| 虎兕出柙 (211)  | 画地而趋 (203) | 黄道吉日 (308) | 魂飞魄丧 (351) | 机关算尽 (120) | 箕山之志 (368) |
| 虎体原班 (211)  | 画地为牢 (203) | 黄发垂髫 (307) | 魂销魄散 (351) | 机关用尽 (120) | 激薄停浅 (380) |
| 虎头蛇尾 (211)  | 画地为狱 (203) | 黄花晚节 (307) | 混世魔王 (324) | 机杼一家 (120) | 羁旅之臣 (382) |
| 虎尾春冰 (211)  | 画栋雕梁 (203) | 黄卷赤轴 (308) | 混说白道 (324) | 肌肤若冰 (150) | 羁旅之仆 (381) |
| 虎啸风冽 (211)  | 画栋朱帘 (203) | 黄娟青灯 (308) | 混淆是非 (324) | 雪 (150)    | 即鹿无虞 (195) |
| 虎啸风生 (211)  | 画虎不成 (308) | 黄绢幼妇 (308) | 豁达大度 (382) | 肌肉玉雪 (150) | 即事穷理 (195) |
| 虎掷龙擎 (211)  | 反类狗 (204)  | 黄口小儿 (307) | 活剥生吞 (269) | 鸡不及凤 (197) | 即以其人 (195) |
| 虎爪象牙 (211)  | 画虎画皮 (307) | 黄口小雀 (307) | 活龙活现 (268) | 鸡飞犬吠 (197) | 之道 (195)   |
| 虎子狼孙 (211)  | 难画骨 (308)  | 黄雀伺蝉 (308) | 火耕水耨 (85)  | 鸡伏鹄卵 (197) | 还治其 (195)  |
| 户告人晓 (86)   | 知人知 (204)  | 黄童白叟 (308) | 火焦火燎 (85)  | 鸡口牛后 (197) | 人之身 (195)  |
| 户枢不蠹 (86)   | 面不知 (204)  | 黄杨厄运 (307) | 火老金柔 (85)  | 鸡鸣狗吠 (197) | 极乐世界 (168) |
| 户枢不朽 (86)   | 心 (204)    | 黄衣麻食 (307) | 火里火发 (85)  | 鸡皮鹤发 (197) | 极深研几 (169) |
| 怙恶不悛 (231)  | 画戟雕弓 (204) | 黄中内润 (307) | 火上浇油 (85)  | 鸡群一鹤 (198) | 极天际地 (168) |
| 花朝月夕 (172)  | 画瓶盛羹 (203) | 黄钟毁弃 (308) | 火上弄冰 (85)  | 鸡尸牛从 (197) | 急功近利 (259) |
| 花萼相辉 (172)  | 画沙成卦 (203) | 惶恐不安 (347) | 火烧眉毛 (85)  | 鸡犬升天 (197) | 急管繁弦 (259) |
| 花根本不艳 (172) | 画有六法 (203) | 逞恤我后 (343) | 火树琪花 (85)  | 鸡犬相闻 (197) | 急惊风撞 (259) |
| 花红柳绿 (171)  | 画脂镂冰 (203) | 恍然大悟 (267) | 火树银花 (85)  | 鸡豚狗彘 (198) | 着慢郎 (259)  |
| 花街柳陌 (172)  | 画中有诗 (203) | 恍如隔世 (267) | 货取势求 (219) | 鸡胸龟背 (198) | 中 (259)    |
| 花街柳巷 (172)  | 怀宝迷邦 (191) | 混迹天涯 (362) | 祸不单行 (327) | 鸡争鹤斗 (197) | 急景凋年 (259) |
| 花丽孤峭 (171)  | 怀宝夜行 (191) | 灰头土脸 (126) | 祸不妄至 (327) | 积案盈箱 (284) | 急景流年 (259) |
| 花林粉阵 (171)  | 怀冤尸位 (191) | 灰头土面 (125) | 祸不旋踵 (327) | 积财千万 (259) | 急脉缓受 (259) |
| 花马掉嘴 (171)  | 怀金垂紫 (192) | 恢诡谲怪 (267) | 祸从口出 (326) | 不如薄 (259)  | 急于星火 (259) |
| 花木瓜，        | 怀瑾握瑜 (192) | 恢恢有余 (267) | 祸从口生 (326) | 伎在身 (285)  | 急则计生 (259) |
| 空好看 (172)   | 怀簪其罪 (192) | 挥金如土 (247) | 祸从天降 (326) | 积草屯粮 (284) | 急张拒逐 (259) |
| 花奴玉蒸 (171)  | 怀船提槧 (192) | 挥洒自如 (247) | 祸福同门 (327) | 积德累善 (284) | 急竹繁丝 (259) |
| 花钱粉钞 (172)  | 怀船握槧 (192) | 回肠荡气 (132) | 祸福无门 (259) | 积恶余殃 (284) | 疾恶若仇 (293) |
| 花容月貌 (172)  | 怀砖之俗 (192) | 回黄转绿 (132) | 唯人所 (259)  | 积而能散 (284) | 疾风暴雨 (293) |
| 花说柳说 (171)  | 淮橘为枳 (325) | 回山倒海 (132) | 召 (327)    | 积谷防饥 (284) | 疾风扫秋 (293) |
| 花天锦地 (171)  | 淮南鸡犬 (325) | 回天之力 (132) | 祸福相生 (327) | 积厚流光 (284) | 叶 (293)    |
| 花天酒地 (171)  | 欢承爱领 (163) | 回文织锦 (132) | 祸福倚伏 (327) | 积厚流广 (284) | 疾风甚雨 (293) |
| 花甜蜜嘴 (172)  | 欢声雷动 (163) | 回心转意 (132) | 祸福由己 (327) | 积毁消骨 (284) | 疾风迅雷 (293) |
| 花团锦簇 (171)  | 欢天喜地 (163) | 悔不当初 (298) | 祸福之门 (327) | 积毁销骨 (284) | 疾风知劲 (293) |
| 花下晒裈 (171)  | 欢欣鼓舞 (163) | 悔毒之叹 (298) | 祸福之转 (327) | 积毁销金 (284) | 草 (293)    |
| 花香鸟语 (171)  | 环堵萧然 (199) | 悔读南华 (298) | 祸乱生于 (327) | 积金至斗 (284) | 疾雷不及 (293) |
| 花须蝶芒 (172)  | 环堵之室 (199) | 悔过自新 (298) | 所忽 (327)   | 积年累月 (284) | 掩耳 (293)   |
| 花言巧语 (171)  | 环肥燕瘦 (199) | 讳疾忌医 (158) | 祸生不德 (327) | 积欠所压 (259) | 疾行无善 (293) |
| 花颜月貌 (172)  | 环利通索 (199) | 讳莫如深 (158) | 祸生纤纤 (327) | 如负千 (259)  | 迹 (293)    |
| 花影缤纷 (172)  | 环列之尹 (199) | 绘事后素 (274) | 祸生于惰 (327) | 钩 (285)    | 棘园锁院 (335) |
| 花枝招展 (171)  | 缓兵之计 (350) | 海盗海淫 (271) | 祸生于忽 (327) | 积日累久 (284) | 集腋成裘 (343) |
| 花中君子 (171)  | 缓步代车 (350) | 贿赂公行 (283) | 祸与福邻 (326) | 积日累劳 (284) | 集苑集枯 (343) |
| 花烛洞房 (172)  | 缓歌漫舞 (351) | 普泛画涂 (306) | 祸枣灾梨 (327) | 积善余庆 (284) | 痴牛惯豚 (375) |
| 花不再扬 (141)  | 缓急相摩 (351) | 喙长三尺 (340) | 祸之来也 (327) | 积少成多 (283) | 几笔粉抹 (24)  |
| 华冠丽服 (141)  | 缓心无成 (350) | 惠而不费 (333) | 人自生 (327)  | 积衰新造 (284) | 己所不欲 (24)  |
| 华衰之赠 (141)  | 浣濯缝纫 (300) | 惠然肯来 (333) | 之 (327)    | 积水成渊 (284) | 勿施于 (24)   |
| 华如桃李 (141)  | 涣然冰释 (299) | 毁家纾难 (358) | 祸至不惧 (327) | 积土成山 (283) | 人 (46)     |
| 华山金石 (141)  | 患难相死 (313) | 蕙心兰质 (373) | 祸中有福 (327) | 积土为山 (283) | 己正而后 (24)  |
| 华屋山丘 (141)  | 患难与共 (313) | 蕙心纨质 (373) |            | 积水为 (284)  | 发 (46)     |
| 华星秋月        | 焕然一新 (321) | 昏定晨省 (224) |            | 海 (284)    | 虬虱相吊 (215) |
| 之章 (141)    | 荒酒纵猎 (243) | 昏昏默默 (224) | 击鼓之鐘 (96)  | 积微成著 (284) | 挤眉弄眼 (247) |
| 滑稽之雄 (347)  | 荒年无六 (243) | 昏世之主 (224) | 饥餐渴饮 (113) | 积薪厝火 (284) | 脊令在原 (289) |
| 滑稽泥巴 (347)  | 亲 (243)    | 昏天黑地 (224) | 饥而忘食 (113) | 积雪囊萤 (284) | 计功受赏 (88)  |
| 滑稽之耀 (347)  | 荒唐之辞 (243) | 昏头昏脑 (224) | 饥附饱扬 (113) | 积重难返 (284) | 记向之学 (116) |
| 化腐朽为        | 荒唐之言 (243) | 浑浑噩噩 (269) | 饥火烧肠 (113) | 箕风毕雨 (368) | 既有今日 (24)  |

# 目 录

|        |       |       |      |       |      |       |      |       |      |       |
|--------|-------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|------|-------|
| 何必当    | 奸胥猾吏  | (163) | 贱敛贵出 | (253) | 骄傲自满 | (275) | 解甲投戈 | (359) | 金石之计 | (222) |
| 初      | 尖酸刻薄  | (130) | 贱买贵卖 | (253) | 胶车逢雨 | (290) | 解剑拜仇 | (359) | 金石之坚 | (222) |
| 济恶敛怨   | 坚不可摧  | (176) | 渐仁厚谊 | (324) | 胶漆至黏 | (290) | 解路之烈 | (360) | 金淘沙拣 | (223) |
| 济济一堂   | 坚定不移  | (176) | 渐入佳境 | (324) | 焦熬投石 | (343) | 解民倒悬 | (359) | 金题玉躞 | (224) |
| 继绝存亡   | 坚甲利刃  | (176) | 鉴貌辨色 | (282) | 焦金流石 | (343) | 解人难得 | (359) | 金童玉女 | (223) |
| 寂寞无为   | 坚忍不拔  | (176) | 僭赏滥刑 | (368) | 焦金烁石 | (343) | 介山之志 | (76)  | 金头银面 | (222) |
| 寂若无人   | 坚贞不屈  | (176) | 箭无空发 | (374) | 焦沙烂石 | (343) | 戒莫如豫 | (166) | 金丸弹雀 | (222) |
| 寂天寞地   | 肩摩毂击  | (233) | 江东独步 | (157) | 焦心热中 | (343) | 戒舟葱棹 | (166) | 金乌玉兔 | (222) |
| 寄颜无所   | 兼而有之  | (296) | 江海不逆 | (296) | 焦芽败种 | (343) | 芥拾青繁 | (171) | 金衣公子 | (223) |
| 祭丰不奢   | 兼权熟计  | (296) | 小流   | (157) | 蛟龙得水 | (340) | 借刀杀人 | (287) | 金印紫绶 | (223) |
| 稷蜂社鼠   | 兼人之勇  | (296) | 江海之士 | (157) | 蛟腾虎啸 | (340) | 借风使船 | (287) | 金玉满堂 | (222) |
| 骥马程兮   | 兼容并包  | (296) | 江汉朝宗 | (157) | 狡狐三穴 | (259) | 借花献佛 | (287) | 金章紫绶 | (223) |
| 骥子龙文   | 兼弱攻昧  | (296) | 江汉之珠 | (157) | 狡兔尽， |       | 借尸还魂 | (287) | 金枝花萼 | (223) |
| 加官进禄   | 兼收并蓄  | (296) | 江河大溃 |       | 良犬烹  | (259) | 借交报仇 | (287) | 金紫之爵 | (223) |
| 加人一等   | 兼听则明  |       | 从蚁穴  | (157) | 狡兔三穴 | (259) | 借客报仇 | (287) | 矜寡孤独 | (274) |
| 佳儿佳妇   | 偏信则   |       | 江河日下 | (157) | 狡兔死， |       | 借水行舟 | (287) | 矜矜业业 | (274) |
| 佳人薄命   | 暗     | (296) | 江湖满地 | (157) | 走狗烹  | (259) | 借题发挥 | (287) | 筋疲力尽 | (342) |
| 佳士不屈   | 兼制生死  | (296) | 江流之胜 | (157) | 矫情镇物 | (315) | 借箸代筹 | (287) | 筋信骨强 | (342) |
| 家丑不可外扬 | 拣佛烧香  | (208) | 江山不老 | (157) | 矫揉造作 | (315) | 今朝有酒 |       | 襟山带河 | (384) |
| 家到户说   | 拣精拣肥  | (208) | 江山之助 | (157) | 矫枉过直 | (314) | 今朝有醉 | (76)  | 仅容旋马 | (75)  |
| 家道从容   | 俭存奢失  | (256) | 江水三千 |       | 脚跟无线 | (318) | 今愁古恨 | (76)  | 仅以身免 | (75)  |
| 家给人足   | 俭故能广  | (256) | 里    | (157) | 脚忙手乱 | (318) | 今非昔比 | (76)  | 谨毛失貌 | (364) |
| 家鸿野雉   | 俭可助廉  | (256) | 江夏黄童 | (157) | 叫苦不迭 | (104) | 今年花似 |       | 谨小慎微 | (364) |
| 家家户户   | 俭者心尝  |       | 江心补漏 | (157) | 叫苦连天 | (104) | 去年好  | (76)  | 谨言慎行 | (364) |
| 家见户说   | 富     | (256) | 江月不离 |       | 教儿婴孩 | (306) | 今生今世 | (76)  | 锦帆锦缆 | (357) |
| 家累千金，  | 茧丝牛毛  | (243) | 流水去  | (157) | 教学相长 | (306) | 今月古月 | (76)  | 锦缆牙檣 | (357) |
| 坐不垂堂   | 简而无微  | (357) | 江左之秀 | (157) | 教一识百 | (306) | 金榜题名 | (224) | 锦囊佳制 | (357) |
| 家破人亡   | 见鞍思马  | (73)  | 姜桂之性 | (265) | 将伯之助 | (261) | 金波玉液 | (223) | 锦上添花 | (357) |
| 家徒壁立   | 见出知人  | (72)  | 将错就错 | (261) | 阶柳庭花 | (160) | 金钗十二 | (223) | 锦心绣口 | (357) |
| 家无绮纨   | 见弹求聘  |       | 将功赎罪 | (261) | 阶前万里 | (160) | 金城千里 | (223) | 锦绣江山 | (357) |
| 家言邪学   | 见见闻闻  | (72)  | 将功折罪 | (261) | 皆大欢喜 | (249) | 金城铁壁 | (223) | 锦衣狐裘 | (357) |
| 家有千贯，  | 见景生情  | (73)  | 将机就机 | (261) | 接二连三 | (310) | 金殿玉楼 | (224) | 锦衣玉带 | (357) |
| 不如日进分文 | 见怪不怪  |       | 将机就计 | (261) | 嗟悔无及 | (339) | 金貂换酒 | (223) | 锦衣玉食 | (357) |
| 家至户告   | 其怪自坏  |       | 将计就计 | (261) | 街坊邻舍 | (343) | 金鳌皂帽 | (223) | 尽力而为 | (158) |
| 家至户晓   | 见见闻闻  | (72)  | 将门有将 | (261) | 街衢洞达 | (343) | 金凤玉露 | (222) | 尽盘将军 | (159) |
| 戛然而止   | 见君命有  |       | 将相之具 | (261) | 街谈巷说 | (343) | 金戈铁马 | (222) | 尽入彀中 | (158) |
| 戛玉敲冰   | 见钱眼开  | (72)  | 将信将疑 | (261) | 街头巷尾 | (343) | 金革之难 | (223) | 尽善尽美 | (159) |
| 甲第连云   | 见仁见智  | (72)  | 将信将疑 | (261) | 节哀顺变 | (98)  | 金龟换酒 | (223) | 尽心竭力 | (158) |
| 价廉物美   | 见善如不及 |       | 浆酒霍肉 | (292) | 节用裕民 | (98)  | 金科玉律 | (223) | 如无书  | (159) |
| 价增一顾   | 见所不见  | (72)  | 僵仆烦愦 | (374) | 节制之兵 | (98)  | 金科玉条 | (223) | 尽忠报国 | (159) |
| 假金只用   | 见兔放狗  | (72)  | 讲信修睦 | (158) | 结发事师 | (275) | 金口玉音 | (222) | 劲骨丰肌 | (198) |
| 真金镀    | 见兔放鹰  | (72)  | 降贵纡尊 | (235) | 结舌杜口 | (275) | 金匱石室 | (223) | 近悦远来 | (183) |
| 假力于人   | 见危致命  | (72)  | 结绳而治 | (275) | 结绳之政 | (275) | 金兰之契 | (222) | 进寸退尺 | (166) |
| 假人于越   | 见微知著  | (73)  | 交臂失之 | (151) | 结绳之政 | (361) | 金兰之友 | (222) | 进旅退旅 | (166) |
| 而救溺    | 见尧于墙  | (72)  | 交淡若水 | (151) | 截长补短 | (365) | 金门绣户 | (222) | 进瞿之谦 | (166) |
| 子      | 见兔放张  | (258) | 交头接耳 | (151) | 截镫留鞭 | (365) | 金奴银婢 | (222) | 进悦退速 | (166) |
| 假惺惺    | 见安风骨  | (235) | 郊寒岛瘦 | (229) | 截断众流 | (365) | 金山力士 | (222) | 进退中度 | (166) |
| 假誉驰声   | 见拔弩张  | (258) | 娇生惯养 | (273) | 截趾适履 | (365) | 金舌弊口 | (223) | 进退中绳 | (166) |
| 嫁狗逐狗   | 见战森森  | (258) | 浇瓜之惠 | (269) | 竭力尽能 | (370) | 金石管弦 | (222) | 经文纬武 | (237) |
| 嫁鸡逐鸡   | 见一人敌  | (258) | 骄傲自负 | (275) | 竭智尽忠 | (370) | 金石丝竹 | (222) | 经达权变 | (237) |
| 奸人之雄   |       |       |      |       |      |       | 金石之策 | (222) | 经国大业 | (237) |